OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 2

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-5 जून-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

सम्बन्धों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाकर करें खुशी का इज़हार

अजमेर। 'खुशनुमा संबंधों की चाबी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर विराजमान ब्र.कु. शांता तथा ब्र.कु. शिवानी। सुनने आये शहर के प्रबुद्ध जन।

अजमेर। सम्बन्धों में खुशी के लिए हमें 'सिर्फ मेरी सोच ही सही है' यह अवधारणा छोड़ हर एक को सही समझ, आपसी सम्बन्धों में स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। स्वतंत्र दृष्टिकोण के लिए याद रखें कि हर आत्मा अपनी-अपनी लम्बी यात्रा पर है।

उक्त उद्गार राजयोगिनी ब्र.कु. शान्ता के निर्देशन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'खुशनुमा सम्बन्धों की चाबी', 'अपेक्षाओं से स्वीकृति तक' और संतुलित जीवन' विषयों पर आयोजित त्रिदिवसीय सत्र में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें अपना पार्ट बेस्ट बजाना है, सिर्फ इस पर ध्यान देना है। सम्बन्धों में अध्यात्म को अपनाकर हम सच्ची खुशी का आदान-प्रदान सहज रीति से कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि आज हमें अपेक्षायें रखने के बजाय एक दूसरे को मूल स्वरूप में स्वीकार करने की ज़रूरत है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि आज अभिभावकगण अपने बच्चों से अपेक्षायें अधिक रखते हैं और उन्हें स्वीकारते कम हैं जिस कारण सम्बन्धों में दूरी बढ़ रही है, आज आवश्यकता है नि:स्वार्थ प्रेम और आत्मीय सम्मान से उन्हें सही राह दिखाने की। उन्होंने आगे बताया कि कई बार हम महसूस करते हैं कि इस वर्तमान जीवन में अच्छे कर्म करते भी हमें आशान्वित फल की अनुभूति नहीं होती है इसके लिए हम याद रखें कि वर्तमान जीवन के कर्मों की बैलेंस शीट में पूर्व जन्मों के नकारात्मक कर्मों का बकाया भी साथ आया है। इस जन्म में सत्कर्मों की अधिकता से जब वह बकाया चुक्तू होगा तो हमें अच्छे फल की प्राप्ति होने लगेगी। परन्तु तब तक के लिए हमें धैर्यता और शान्ति के साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार अपने मंसा संकल्पों, वाणी और कर्मों द्वारा करते जाना है।

- खुशी जीवन यात्रा का पड़ाव नहीं बल्कि यात्रा को बेहतर बनाने का तरीका।
- व्यवहार में आध्यात्मिक पुट दे कर करें खुशी का इज़हार।

उन्होंने राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा जनसमुदाय को शान्ति एवं आनंद का अनुभव भी कराया। अन्त में उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था 140 देशों में 8000 से अधिक सेवाकेन्द्रों के द्वारा राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रही है। अजमेर शहर में अलग-अलग स्थानों पर सात सेवाकेन्द्र हैं जहाँ नि:शुल्क आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग मेडिटेशन का लाभ लिया जा सकता है। इसी के फलस्वरूप प्रोग्राम के पश्चात् सेवाकेन्द्रों पर त्रिदिवसीय शिविर में कई आत्माएँ ज्ञान लाभ लेने हेतु आ रही हैं।

सामाजिक सशक्तिकरण में कला व संस्कृति का अहम् योगदान

''स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान'' पर चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन। भारत तथा चीन के कलाकारों ने दी मनभावक प्रस्तुतियां

ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में ''स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रमुख वक्ताओं ने कला व संस्कृति को सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बनाने का आहवान करते हुए कहा कि कला व संस्कृति के बिना समाज निष्प्राण हो जायेगा। देश को जोड़ने में कलाकारों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए वक्ताओं ने कहा कि कला व संस्कृति को शाश्वत बनाने के लिए कलाकारों के जीवन में पारदर्शिता, पवित्रता व मेडिटेशन का समावेश होना आवश्यक है।

कुमारी वैशाली अपने भाई के साथ गणेश वंदना का नृत्य प्रस्तुत करते हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए दीप प्रज्जवलित करने वालों में मुख्य अतिथि गुजरात प्रदेश कांग्रेस की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष दिनेश कुमार पटेल, 19 भाषाओं में गायन के आधार पर ख्याति अर्जित कर चुकीं एस. जानकी बैंगलोर, हरियाणा के कवि रूपनारायण चानना, मुम्बई से आए फिल्म व टी.वी.निदेशक संदीप गुप्ता, बैंगलोर की फिल्म व टी.वी. कलाकार रेखा राव, 2007 में मि.इंडिया चुने गये भारत कुन्द्रा, निफा संस्था के अध्यक्ष प्रितपाल सिंह पन्नु के अलावा ब्रह्माकुमारी संस्था में कला व संस्कृति प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय तथा ज्ञानसरोवर की निदेशिका डॉ.निर्मला शामिल थे। इससे पूर्व स्वागत

शेष पेज 8 पर...

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दिनेश कुमार पटेल, एस. जानकी, रूपनारायण चानना, संदीप गुप्ता, रेखा राव, भारत कुन्द्रा, प्रितपाल सिंह पन्नु, ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. डॉ. निर्मला।